अध्याय - तृतीय

अध्याय – तृतीय
शोध प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना

अनुसंधान कार्य में सही दिशा में अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध का व्यवस्थित अभिकल्प या रूपरेखा तैयार की जाये क्योंकि यही अभिकल्प ही शोध को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है इसमें न्यादर्श के चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है। न्यादर्श जितने अधिक सुदृढ़ होगे शोध के परिणाम भी उतने ही विश्वसनीय व परिशुद्ध होंगे। इसके बाद सांख्यिकीय विधि के माध्यम से प्रदतों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर निष्कर्ष निकाला जाता है तब कहीं जाकर एक शोध रूपी भवन खड़ा हो पाता है। पी.वी. युंग के शब्दों में "अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित विधि है जिसमे द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है तथा उनके अनुक्रमों पारस्परिक संबंधों के कारणात्मक व्याख्याओं तथा प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करती है। जो प्राप्त तथ्यों को निर्धारित करते हैं।

अतः अनुसंधान किसी क्षेत्र विशेष की समस्या का सर्वाणीय विश्लेषण है।

3.2 शोध डिजाईन –

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अध्ययन करना है अतः इस कार्य हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रणाली का चयन भोपाल जिले के सीबीएईई स्कूलों में किया गया जिसमें

पहला – केन्द्रीय विद्यालय, दूसरा जवाहर नवोदय विद्यालय रातीबड़ तीसरा सेन्ट जोर्ज रेसीडेन्टल स्कूल करोद चौराहा इन स्कूलों के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा, मानसिक तनाव, शैक्षिक उपलब्धियां, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिवृति आदि का अध्ययन करने हेतु किया गया है।

3.3 न्यायदर्श का चयन –

किसी भी अनुसंधान में प्रविदर्श का चुनाव एवं उसकी संख्या महत्वपूर्ण पहलू होता है। प्रस्तुत अध्ययन में समय सीमा का ध्यान में रखते हुए प्रतिदर्श का उद्देश्य पूर्ण प्रकार से चयनित किया गया है।

शोध की प्रतिदर्श की विशेषताएं निम्नलिखित है।

1. इस शोध कार्य के अन्तर्गत तीन स्कूल से कुल 150 विद्यार्थियों को चयनित किया गया।
2. इस शोध हेतु केन्द्रीय विद्यालयों का चयन किया गया।
3. जिसमें से 150 विद्यार्थी उपलब्ध रहे है।
4. जिसमें 100 छात्र, 50 छात्राऐं उपस्थित रही है।
5. सभी विद्यार्थी भोपाल जिले के विद्यालयों से है।
6. हमने प्राथमिक स्तर पर कक्षा छठवी के कक्षा शिक्षकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया

तालिका क्रमांक 3.2.1

न्यादर्श का विवरण

क्र.	स्कूल का नाम	प्रतिदर्श का प्रकार	छात्र	छात्राऐं	कुल संख्या	शिक्षक	शिक्षकाऐं	कुल संख्या
1.	केन्द्रीय शिक्षा संस्थान बैरागढ	उद्देश्यपूर्ण	40	20	60	4	4	8
2.	जवाहर नवोदय रातीबड़	उद्देश्यपूर्ण	35	15	50	4	3	7
3.	सेन्ट जोर्ज रेसी डेन्टल स्कूल करोद	उद्देश्यपूर्ण	25	15	40	3	2	5
	कुल संख्या		100	50	150	11	9	20

3.4 चर – शोध समस्या में निम्न चर है।

1. आत्म अवधारणा,
2. मानसिक तनाव
3. शिक्षकों का मत सीसीई पर
4. सीसीई पर शिक्षकों की अभिवृति
5. सीसीई पर विद्यार्थियों की अभिवृति
6. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

3.5 उपकरण

किसी भी शोध कार्य में उपकरणों का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि इन उपकरणों के माध्यम से ही आवश्यक आकड़े एकत्रित किये जाते है। किसी भी अध्ययन से प्राप्त

निष्कर्षो की विश्वसनीयता प्रयुक्त उपकरण पर आधारित है। उपकरण का चयन एवं उपयोग बड़ी सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। जिससे परिणाम की विश्वसनीयता पर संदेह ना किया जा सके। प्रस्तुत शोध में प्रयोग उपकरण इस प्रकार है।

1. सी.सी.ई. के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति – स्वयं निर्मित
2. सी.सी.ई. के प्रति शिक्षकों की अभिवृति – स्वयं निर्मित
3. विद्यार्थियों का मानसिक मापन (डॉ ऐ कुमार)
4. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन
5. सी.सी.ई. की वर्तमान स्थिति
6. विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा का अध्ययन (डॉ हर मोहन सिंह)

अध्यापकों की अभिवृति सूची–

सी.सी.ई के प्रति अध्यापकों की अभिवृति सूची में लगभग 20 कथन है इनका उद्देश्य सी.सी.ई. के प्रति अध्यापकों की अभीवृति को मापने के लिये किया गया है इसमें कोई कथन सही या गलत नहीं है। इसके द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि व्यक्तिगत रूप से अध्यापकों के विचार क्या है। इसमें निर्देशन के अनुसार प्रत्येक कथन को पड़ना है एवं निर्णय करना है कि आपका इस संबंध में क्या विचार या अनुभव है। इसमें तीन बिन्दुओं में से आपको जो सही लगता है उस पर (✓) चिन्ह लगाना है ताकि दो को छोड़ देना है कुल 20 कथनों में से शुरू के 10 सकारात्मक है एवं बाद के 10 नकारात्मक है। यह उपकरण स्वयं निर्मित है।

अंक सूची

प्रवृतियां	सहमत	असहमत	अनिश्चित
सकारात्मक	3	1	2
नकारात्मक	1	3	2

मानसिक मापन–

मानसिक मापन का प्रयोग विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति को दर्शाता है यह मनोवैज्ञानिक परीक्षण है इसका निर्माण डॉ. ऐ. कुमार ने किया है। इसमें लगभग 30 कथन है सभी विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति को दर्शाते है। जो शिक्षा के प्रति है।

वैद्धता – इस स्कील की वैद्धता भारतीय परिवेश में 0.61 पाई गई जो कम परन्तु सार्थक है।

विश्वसनीयता – इस परीक्षण का विश्वसनीयता गुणाक दो विधियों द्वारा ईसपलिट हाफ विधि तथा कुडर रिचरडसन फरमूला 20 से ज्ञात किया गया जो 0.81 तथा 0.83 है।

अंकन विधि

हाँ	नहीं
1	0

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण –

विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धिता का मापन करने के लिए इसका प्रयोग किया गया तथा विद्यार्थियों के स्कूल रिपोर्ट कार्ड में से उनके ग्रेडिंग के हिसाब से उनका स्कोर नोट किया गया।

सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में सी.सी.ई. की वर्तमान अवस्था –

केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड शिक्षा संस्थान में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को वर्तमान स्थिति पर शिक्षकों के मतों को जानने के लिए हमने एक 20 कथनों की प्रश्नावली बनाई थी जिसमें हमने शिक्षकों के मतो को वर्णात्मक रूप में प्रस्तुत किया इसमें अंकन प्रणाली नहीं थी।

आत्म अवधारणा परीक्षण –

इस परीक्षण का निर्माण डॉ. हर मोहन सिंह ने किया इसमें 22 कथन थे इसमें 9,10,17 नम्बर के कथन नकारात्मक है तथा बाकी के कथन सकारात्मक है। इसको करने के लिए 40 मिनिट का समय दिया गया।

वैद्वता एवं विश्वसनीयता –

यह परीक्षण विश्वसनीय है एवं प्राथमिक स्तर पर इस परिक्षण को निर्धारित किया गया है इस परीक्षण की विश्वसनीयता री–टेस्ट विधि से ज्ञात की गई है जो 0.80 है।

	बिल्कुल नहीं	कभी कभी	कुछ बार	अधिक बार	हमेशा
सकारात्मक	1	2	3	4	5
नकारात्मक	5	4	3	2	1

3.6 शोध में प्रयुक्त उपकरणों का संकलन –

शोध उपकरणों के प्रशासन के लिए 10 दिन का समय निश्चित किया गया था। अनुसंधानकर्ता द्वारा 31 जनवरी से 11 फरवरी के दौरान मैदानी कार्य (फिल्ड वर्क) किया गया अनुसंधानकर्ता ने प्रपत्रों की पूर्ति स्वयं सब विद्यालय में जाकर करवाई भोपाल जिले के तीन केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड विद्यालयों का चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिए क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय द्वारा एक समय सीमा निर्धारित किया गया था। शोधकर्ता ने प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय में अलग–अलग निर्धारित तिथि स्थान समय पर विद्यालय में स्वयं जाकर प्राचार्यो एवं संस्था प्रधान से मिलकर बातचीत की और अपना परिचय देकर अपने आने का उद्देश्य बताकर शिक्षक शिक्षकाओं से लघु शोध प्रबन्ध विषय की जानकारी दी एवं शोधकर्ता ने प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय में अलग एवं पूर्ण सहयोग हेतु प्रश्नावली दे दी गई और साथ–साथ अध्ययन से संबंधित एवं कुछ सामान्य चर्चाए भी की गयी।

1. प्रदत्त जानकारी का उपयोग केवल कार्य में ही किया जायेगा।
2. प्रदत्त जानकारी को गोपनीय रखा जाएगा
3. कथन के उत्तर आपस में मित्रों से पूछकर देने के लिए सख्त मना किया गया था।
4. जो भी परीक्षण विद्यार्थियों के उपर किया गया था उसको उसी दिन लिया गया था।

लघुशोध के प्रदत्त संकल्प हेतु प्राथमिक विद्यालयों के प्राचार्यो एवं विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का पूर्ण सहयोग मिला।

3.5 प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

शोध समस्या से संबंधित प्रदत्तों के सारणीयन करने के उपरान्त उनसे उचित परिणाम प्राप्त करने के लिये उपयुक्त सांख्यिकीय प्राविधियों का प्रयोग किया जाता है। जिसमें निष्कर्षो तथा परिणामों की विश्वसनीय रूप से व्याख्या की जा सके प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में प्रदतों के विश्लेषण के लिए सह संबंध गुणांक, मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।